जीभ पर बन्धन

• ब्रह्माकुमार नरेश, मुजफ्फरनगर

जितना बोलें उससे दुगुना सुनें

अधिक बोलने वाला मनुष्य दोस्तों को पीड़ा देता है, दुश्मनों को फायदा पहुँचाता है और स्वयं को हानि पहुँचाता है। अधिक बोलकर किसी शत्रु को मित्र नहीं बनाया जा सकता परंतु अधिक बोलकर किसी मित्र को शत्रु बनाया जा सकता है। जिस मनुष्य के पास जितने ज्यादा अच्छे विचार होते हैं, वह उतना कम वाचा में आता है और जब भी वाचा में आता है, कम शब्दों में ज्यादा बातें कर लेता है। वह बोलते समय, समय बर्बाद नहीं करता है बल्कि बोलता ही है समय बचाने के लिए। बोलने की सही कला केवल यही नहीं है कि सही जगह पर सही बात बोली जाये बल्कि यह भी है कि जहाँ ग़लत या नकारात्मक बातों का संदर्भ देना पड़े, वहाँ चुप रहा जाये। प्रकृति ने मनुष्यों को जीभ एक दी है परंतु आँख व कान दो-दो, जो कि इशारा है कि मनुष्य जो बोले, उसके वर्तमान परिणाम को भी देखे और भविष्य परिणाम को भी देखे। और जितना बोले, उससे दुगुना सुने। जिसे सुनने की कला आती है, वह मतलब की बातें सुनता है और बेमतलब की बातों को अनसुना करता है। उसके नेत्र बोलते हैं। ज़रा-सी बात को भाषण का रूप दे देना एक विकार है परंतु किसी भाषण को 'गागर से सागर' करके समाप्त कर देना एक कला है।

बोलो तभी जब बोल खामोशी से बेहतर हों

जिस प्रकार दौड़ती हुई ट्रेन पर ध्यान नहीं टिक सकता, उसी प्रकार चलती जीभ पर भी कोई विचार नहीं ठहर सकता अर्थात् बक-बक करते मनुष्य को सद्विचार का सहयोग नहीं मिल पाता। जिस प्रकार बहते हुए पानी पर कोई प्रतिबिम्ब नहीं बन सकता, उसी प्रकार बहकी हुई जीभ पर कोई मीठी बात नहीं आ सकती। ऐसे मनुष्य का चित्त एक विषय पर टिक नहीं सकता। बोलना तभी चाहिये, जब बोल 'खामोशी' से बेहतर हो। मौके की नज़ाकत को देख चुप रह जाना या बेमौके न बोलना, एक लंबी-चौड़ी असफल दलील से बेहतर है। बस ज़रूरत है जीभ पर बंधन की।

वाणी से संस्कारों की पहचान

बिहार में सिंह बहादुर नाम का एक राजा अपनी राजधानी आनन्दपुरी में रहता था। पास में संन्यासियों का एक आश्रम था। एक बार राजदरबारियों ने द्वेषवश राजा से शिकायत करी कि इस आश्रम के संन्यासी पकवान खाकर सोते रहते हैं और कोई तपस्या नहीं करते। राजा ने आश्रम के महंत स्वामी निरालम्बानन्द को बुलवाया और इस आरोप का जवाब माँगा। महंतजी ने कहा कि मैं कल सवेरे तीन बजे आऊँगा और आप मेरे साथ चलना। सवेरे महंत जी राजा को, राजदरबारियों के घर पर ले गये और उनके चेहरे पर पानी का छींटा डाला। वे सोते हुए भी चिड़चिड़ा गये और मुख पर पानी डालने वाले को गालियाँ देने लगे। महंत फिर राजा को उनकी गौशाला में ले गये और सो रहे रखवालों पर भी पानी का छींटा डाला। वे भी चिल्लाने लगे, 'कौन हैं जो सोने नहीं दे रहे हैं, भागो यहाँ से।' फिर महंत राजा को अपने आश्रम पर ले कर आये और सो रहे संन्यासियों के चेहरे पर पानी डाल दिया। संन्यासियों के मुँह से निकला,'हरि ओम्', 'राम-राम' इत्यादि। इससे पता पड़ता है कि राजदरबारी, गौशाला के रक्षक और संन्यासी के संस्कार किस प्रकार के थे।

मृत्योपरान्त बोले गए शब्दों का साक्षात्कार

बार-बार के उपयोग से कोई भी चीज़ या तो घटती है या अनुपयोगी होती जाती है परंतु जीभ का बार-बार